उड़िया, बंगला व हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

–डॉ0 आर के टण्डन, खरसिया

उड़िया साहित्य में आदिकाल–

इसमें मुख्यतः सिद्ध साहित्य, बौद्ध गान ओ दोहा, चौतीशा साहित्य, सारला साहित्य, गोरखनाथ के भजन व कोइलि साहित्य आते हैं। इस युग में हास्य, श्रृंगार के साथ–साथ तत्त्व ज्ञान व दार्शनिक चिंतन का पता चलता है।

सिद्ध साहित्य की सम्यक् आलोचना करने पर मालूम होता है कि कण्हुपाद, शबरपाद, लोहिपाद, राजा इन्द्रभूति, विरूप, जालन्धरि, कम्बल, राहुलभद्र, असितधन, बुद्धश्रीज्ञान, अभयकर गुप्त, धमलवर्ग, निर्वाणश्री, शान्तिगुप्त, प्राज्ञ आदि प्रधान तान्त्रिक धर्मप्रचारक उड़िसा या उड्डियान पीठ के वासी थे। इनका समय 600 से 1000 ई0 है। सातवी शताब्दी तक उड्डियान पीठ उड़िसा में तान्त्रिक पीठ के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुकी थी। सिद्ध इन्द्रभूमि ने ''प्रज्ञोपाय विनिश्चय सिद्धि'' ग्रन्थ में उड्डियान के देवता बुद्ध रूपी जगन्नाथ जी की भी स्तुति है। धर्म और सामाजिक रीति–नीति की दृष्टि से ''बौद्ध गान ओ दोहा'' या ''सिद्ध दोहा'' की प्राचीन भाषा व भाषा–तत्त्व का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ''कलसा चौतीसा'', ''विपरीत चौतीसा'' में शैव धर्म का परिचय मिलता है। इसमें वृद्ध रूप शिव जी के साथ पार्वती के परिणय संबंधी विचारों का हास्य रूप है। भाव और भाषा–सम्पदा से पूर्ण हजारों चौतिशाएँ आज भी उड़िसा के लोकमुख से आदर के साथ गायी जाती है। प्रेम, मिलन, विरह, करूण आत्मनिवेदन, भजन, नायक–नायिका का पत्र–विनिमय, ऋतु–वर्णन के साथ ही कठिन योग–तत्त्व व दार्शनिक चिंतन इसके मुख्य विषय हैं।

15वीं सदी के सूर्यवंशी राजा कपिलेन्द्र देव के राजकाल में शूद्रमुनि सारलादास द्वारा रचित ''सारला महाभारत'' में कई जगह नाथ सम्प्रदाय का आभास मिलता है। सारलादास की मुख्य रचनाएँ– महाभारत, विलंका रामायण, चण्डी पुराण, लक्ष्मी नारायणी–वचनिका हैं। सारलादास जी उड़िया साहित्य व भाषा के वास्तविक जन्मदाता है। आप कटक जिले के निकटस्थ कनकावती नगरी के निवासी थे। सारलादास कृत ''महाभारत'' प्राचीन उड़िया साहित्य का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। 15वीं सदी के सामाजिक तथा सांस्कृतिक इतिहास का एक विशद् विवरण इस सारला महाभारत में देखने को मिलता है। महाभारत की सामरिक साज–सज्जा में उड़िया सैनिकों की वेशभूषा, विभिन्न मल्ल युद्ध, अग्र और पश्च सैन्य दलों के विराट समारोह, तत्कालीन विभिन्न अस्त्र–शस्त्रों के वर्णन आदि के द्वारा तत्कालीन उड़िसा का गौरवमय चित्र अंकित किया गया है। आपके द्वारा रचित अन्य मुख्य कृति ''चण्डी पुराण'', कथावस्तु की दृष्टि

से मार्कण्डेय पुराण के महिषासुर वध उपाख्यान पर आधारित है। सारला साहित्य की भाषा में ओजस्विता, सर्वार्थ प्रकाश–शक्ति, उड़िया संस्कृति व सभ्यता का उच्च निदर्शन है।

उड़िसा में गोरखनाथ के गाए हुए अनेक भजन आज भी प्रचलित है। इसके अतिरिक्त ''सप्तांग योगधारण'' नामक पुस्तक में गोरखनाथ जी के भजन का संग्रह किया गया है। 1466 से 1510 ई0 के मध्य रचित ''सोमनाथ वृतकथा'' में बौद्ध धर्म का महत्त्व प्रकट हुआ है। इसी समय मार्कण्डदास लिखित ''केशल कोइलि'' (चौतीशा शैली में लिखित) में मातृ हृदय का वात्सल्य रस यशोदा के मुख से मुखरित हो उठा है। मार्कण्डदास की अन्य कृति ''महाभाष'', तत्त्वज्ञान संबंधी उच्च कोटि का ग्रन्थ है। इसमें रामचन्द्र की महिमा के साथ–साथ ब्रह्मज्ञान की आलोचना की गई है। भक्त कवि जगन्नाथ दास ने ''अर्थ कोइलि'', भक्त कवि बलराम दास ने ''कान्त कोइलि'', भक्त कवि नायिका ने ''ज्ञानोदय कोइलि'' का प्रणयन किया, जिसे प्राचीन उड़िया साहित्य में लोकप्रिय गीति कविता के रूप में विशेष ख्याति मिली। 1500 ई0 के आसपास, अर्जुनदास की ''रामविभा'', ''गोपी चन्दन काव्य'', गजपति कपिलेन्द्र की ''परशुराम विजय'' (संस्कृत नाटिका), भक्त कवि नीलाम्बर दास की ''जैमिनी भारत'', ''पद्म पुराण'', ''रूद्र स्तुति'', ''देउलतोत्वा'' प्रधान हैं। चैतन्यदास के दाण्डिवृत में लिखित ''विष्णु गर्भ पुराण'', नवाक्षरी वृत में लिखित ''निर्गुण महात्मय'' दोनों तत्त्व मूलक ग्रन्थ हैं। बौद्ध सन्यासी वीरसिंह ने ''वीरसिंह चौतीशा'' लिखी, जिसमें अवज्ञान से संबंधित तत्त्व विस्तारित रूप से लिपिबद्ध है।

बंगला साहित्य में प्राचीन काल

इस काल, 950 ई0 से 1350 ई0 तक माना गया है। लुईपा, कण्हपा, शबरिपा आदि बौद्धों ने 'चर्यापद' की रचना की। इस युग में बंगला साहित्य अपेक्षित विकास नहीं कर पाया।

हिन्दी साहित्य में आदिकाल

इस युग की अवधि 993 ई0 से 1318 ई0 तक मानी गई है। इस युग में सामंतो एवं आश्रयदाताओं का गुणगान व युद्धों को सजीव चित्रण किया गया। बीर रस व श्रृंगार रस की प्रधानता रही। भाषा की दृष्टि से प्रायः डिंगल और अपभ्रंश का प्रयोग किया गया। इस युग की अधिकांश रचनाएँ अप्रमाणिक या अर्द्ध प्रमाणिक हैं। अध्येताएँ इस अध्याय में, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' से विस्तृत वर्णन करें।

उड़िया साहित्य में पंचसखा युग–

पंचसखा युग– यह उत्कल के धर्म तथा साहित्य–जगत में एक समृद्धितम युग है। इस युग में पाँच भक्त कवि सिद्ध पुरूषों ने वैष्णव संत साहित्य की रचना करते हुए ज्ञान मिश्रित भक्ति की धारा बहाई है।

प्राचीन उड़िया साहित्य का पंचसखा युग, उत्कल के धर्म तथा साहित्य–जगत में एक समृद्धितम युग है। इस युग का साहित्य ''उड़िया सन्त साहित्य'' के रूप में प्रसिद्ध है, जो मुख्यतः वैष्णव साहित्य है। इस युग में ज्ञान मिश्रित भक्ति की धारा बहती थी, जिसका मुख्य लक्ष्य अष्टांग तथा सप्तांग योग की सहायता से ब्रह्मदर्शन करना था। इस साहित्य में पूर्ववर्ती महायान के शून्यवाद की निर्गुण धारा का प्रमुख स्थान है। इसमें षट्चक्र तथा हठयोग के माध्यम से शून्य दर्शन करके साधक का जीवन मुक्ति लाभ करना परम कर्त्तव्य बताया गया है।

इस युग में 1. महापुरूष बलरामदास, 2. भक्तकवि जगन्नाथदास, 3. महायोगी अच्युतानन्द, 4. सिद्ध पुरूष यशवन्त, 5. सिद्ध पुरूष अनन्तदास के नाम अग्र पंक्तियों में उल्लेखनीय है।

महापुरूष बलरामदास– इनकी कृतियाँ हैं– वेदान्त सार, गुप्त गीता, ब्रह्माण्ड भूगोल, दीखसार गीता, अमरकोष गीता, जगमोहन रामायण, भाव समुद्र, पणसंचारी, कट अवकाश, कान्त कोइलि, कमल लोचन चौतिशा, लक्ष्मी पुराण। बलरामदास कृत रामायण से उड़ियावासी अन्य ग्रन्थों की तुलना में अधिक प्रभावित हुए हैं।

भक्तकवि जगन्नाथदास– इनकी कृतियाँ हैं– तुलाभिणा, ब्रह्मगीता, भागवत ग्रन्थ, गज स्तुति, उपाहरण, अर्थ कोइलि। इनका भागवत ग्रन्थ, उड़ीसा के घर–घर में 'भागवत आदि' के रूप में पूजित व गठित हो रहा है। यह उड़ियावासियों के लिए बाइबिल जैसा पवित्र ग्रन्थ है।

महायोगी अच्युतानन्द– इनकी कृतियाँ हैं– शून्य संहिता, गुरूभक्ति गीता, अणाकार संहिता व ब्रह्मशांकोलि, छाया, ज्योति और अवाड़ संहिता, हरिवंश, दूतिबाँध चौतिशा, गोपाल का शिशु। इनके 'हरिवंश' में उत्कल के सामाजिक जीवन का चित्र प्रतिफलित हुआ है। यह दाण्डिवृत में लिखा गया है। इसमें कृष्ण–लीला प्रसंग है।

सिद्ध पुरूष यशवन्त– इनकी प्रमुख कृति है– प्रेमोक्त ब्रह्मगीता।

सिद्ध पुरूष अनन्तदास – इनकी प्रमुख कृति है– हेतुदय भागवत।

बंगला साहित्य में मध्य काल

इस काल की अवधि 1350 ई0 से 1800 ई0 तक थी। इस युग में तीन प्रकार के साहित्यों की रचना हुई– वैष्णव साहित्य, मंगल साहित्य व अनुवाद साहित्य। संस्कृत रचनाओं को बंगला में अनुवाद हुआ। वैष्णव कवि बारूचंडी दास ने जयदेव की संस्कृत कविता राधा और कृष्ण का बंगला में अनुवाद किया। चंडीदास नाम से कई कवियों– आदि चंडीदास, कवि चंडीदास, द्विज चंडीदास, दीन चंडीदास आदि ने लेखनी चलाई, ये बंगला साहित्य में चंडीदास पहेली कहलाए। मालाधर बसु ने संस्कृत श्रीमद्भागवत् का ''श्री कृष्ण विजय'' के रूप में बंगला में अनुवाद किया। कृवास ओझा ने रामायण का बंगला में अनुवाद किया। कवियत्री चन्द्रवा ने

रामायणगाथा लिखी। कविन्द्र परमेश्वर ने महाभारत का अनुवाद किया। काशीराम दास ने बंगला महाभारत (1602–1610) की रचना की।

विजय गुप्ता ने 'मानस मंगल' की रचना की। इसी तरह विप्रदास पिपिलाई ने 'मानस विजय' की रचना की। ये दोनों मगल काव्य हैं। इन मंगल काव्यों में देवी–देवताओं की शक्तियों का वर्णन है। इसका दूसरा रूप चंडी मंगल कहलाता है। यह पौराणिक देवी चंडी से संबंधित है। इसके प्रसिद्ध कवि– मणिक दा, माधवाचार्य, द्विज माधव, मुकुन्दराम चक्रवर हैं।

इस युग में मुस्लिम कवियों ने भी बंगला साहित्य को समृद्ध किया। शाह मोहम्मद शगीर ने युसुफ जोलेखा लिखी। सैयद सुल्तान ने सोबे मिराज, रसुल विजोप, इब्लिशनामा, ज्ञान चौसा, ज्ञान प्रदीप व पदावली लिखी। दौलत काजी ने सामान्य–ओ–लोरचन्द्राणी (बंगाली रोमांस की कविता) लिखी। अन्य मुस्लिम कवि हुए जो इस प्रकार हैं– जैनुद्दीन, शेख फैजुल्लाह, दौलत उजीर बहराम खान, हाजी मोहम्मद, शेख प्रान, मोहम्मद खान, अब्दुल हकीम, कुमार अली, मोहम्मद फैसी, शेख सादी आदि।

भरतचन्द्र राय (1712–1760) ने सत्यनारायण पंचाली, रसमंजरी, अन्न द मंगल (अन्नपूर्णा देवी पर आधारित) ग्रंथ लिखे। रामप्रसाद सेन (1721–1781) ने शबत पदावली, विद्यासुन्दर कहिनी, कृष्णा कीर्तन लिखा। मध्य काल के अन्य कवि हुए– राधाकान्त मिश्रा, निधिराम आचार्य, कविन्द्र चक्रवर आदि।

हिन्दी साहित्य में मध्यकाल

हिन्दी साहित्य में मध्यकाल के इस रूप को भक्ति काल कहते हैं। यह हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहलाता है। 1318ई0 से 1643ई0 तक के समय को इसके अन्तर्गत रखा गया है। इस युग में सगुण भक्ति और निर्गुण भक्ति दोनों पर लेखनी चलाई गई। सगुण भक्ति में राम व कृष्ण की भक्ति की धारा बही। रामाश्रयी धारा के मुख्य कवि गोस्वामी तुलसीदास हुए। इन्होंने रामचरितमानस (1574 ई0), विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा। अन्य कवि– माधव दास (रामरासो), अग्रदास (रामाष्टयाम, रामध्यान मंजरी), ईश्वर दास (भरत मिलाप), हृदय राम (हनुमन्नाटक), नाभादास (भक्तमाल) हैं। कृष्णाश्रयी धारा के मुख्य कवि सूरदास हुए। इन्होंने सूर सागर, सूर सारावली लिखा। जन्मजात् अन्धे (कुछ लोगों का मत है कि बाद में अंधे हुए) होने के बावजूद इन्होंने कृष्ण लीला का बेहद सजीव वर्णन किया कि सूरदास जी अमर हो गए। अन्य कवि मीराबाई, छीत स्वामी, चतुर्भुज दास आदि हैं। निर्गुण भक्ति के अन्तर्गत प्रेमाश्रयी व ज्ञानाश्रयी दो धाराएँ समाहित हैं। प्रेमाश्रयी के काव्य सूफी काव्य कहलाते हैं। इस काव्य में खण्डन–मण्डन से दूर हिन्दू घरों में प्रचलित प्रेम कथाओं को काव्य का आधार बनाकर लौकिक प्रेम के माध्यम से पारलौकिक प्रेम की व्यंजना की गई। मसनबी

शैली (फारसी) का प्रयोग करते हुए अन्योक्ति पद्धति का मुख्य रूप से अवलम्बन लिया गया। मुख्य कवि मलिक मुहम्मद जायसी हुए, जिनका ग्रन्थ– 'पद्मावत' है। ज्ञानाश्रयी के प्रमुख कवि– कबीरदास जी हैं। इनका मुख्य ग्रन्थ– 'कबीर ग्रंथावली'। अन्य संत कवि हैं– धर्मदास, गुरू नानक, संत रैदास आदि ।

उड़िया साहित्य में भंजयुग या उड़िया काव्य युग या रीति युग

काव्य युग के कवि मुख्यतः श्रृंगारधर्मी हुए एवं उड़िया रीति–साहित्य मुख्यतः संस्कृत साहित्य के आदर्श में अनुप्राणित हुआ है।

15वीं सदी में उड़िया काव्य का जन्म हो गया था, परन्तु उसकी पुष्टि सत्रहवीं सदी में हुई। भंजयुग के आलंकारिक काव्यों का आरम्भ श्रीधर दास के ''कांचनलता'' काव्य से होता है। काव्य युग के कवि मुख्यतः श्रृंगारधर्मी हुए एवं उड़िया रीति–साहित्य मुख्यतः संस्कृत साहित्य के आदर्श में अनुप्राणित हुआ है। काव्य युग के तीन प्रधान कवि– 1. भक्त कवि दीन कृष्ण दास, 2. उपेन्द्र भज एवं 3. भक्त कवि अभिमन्यु सामंत सिहार हुए।

भक्त कवि दीन कृष्ण दास— इनकी प्रमुख रचनाएँ– रस कल्लोल, रस विनोद, जगमोहन, अमृतसागर बोलि, आरत बाण, राउतिआ आदि हैं। ''रस कल्लोल'', 'क' अक्षर के नियम में लिखित कृष्ण भक्ति मूलक रसात्मक काव्य है, यह उड़िया काव्य जगत में विशेष लोकप्रिय है।

उपेन्द्र भज— 'ब' अक्षर को आरम्भ में रखकर महाकाव्य ''वैदेहिश विलास'', 'स' अक्षर को आरम्भ में रखकर ''सुभद्रा परिणय'', 'क' आद्य और 'क' आन्त्य के नियम में ''कला कउतुक'' आदि ग्रन्थ उनके अगाध शब्द ज्ञान का परिचायक हैं। इनके आलंकारिक काव्यों को कोणार्क के सूची शिल्प के साथ तुलना की जाती है। ये संस्कृत के कवि श्रीहर्ष व कालिदास के साथ तुलनीय हैं। इनका काव्य समूह नायक–नायिका के मिलन–विरह जनित सुख से प्रत्येंक उड़ियावासी के हृदय को स्पर्श करता है। समय–समय पर विरह–मिलन वर्णन में कवि ने अत्यधिक संभोग श्रृंगार रस की अवतारणा की, जो आलोचना का भी विषय है। इनकी अन्य रचनाएँ– लावण्यवती, प्रेमसुधानिधि, रसिक हारावली, सुवर्ण रेखा, कोटि ब्रह्माण्ड सुन्दरी आदि हैं। इनके काव्य को 3 प्रधान भागों में बांटते हैं– पौराणिक, काल्पनिक व आलंकारिक। आलंकारिक काव्यों में – चित्र काव्य बन्धोदय, अवनारस तरंग, यमक राज उचतिशा आदि प्रधान हैं।

भक्त कवि अभिमन्यु सामंत सिहार— ये कवि मराठा और अंग्रेजों दोनों के शासनकाल में जीवित थे। इनका भक्तिरसात्मक काव्य ''विदग्ध चिंतामणी'' उड़िया काव्य निधि की अतुलनीय सम्पदा है। यह श्रृंगार व वात्सल्य रस से परिपूर्ण है।

इस युग में ''पाला साहित्य'' की सृष्टि भी हुई। गायक लोग इस तरह के साहित्य से जन साधारण को मुग्ध किया करते थे।

अन्य रचनाएँ–

कवि	रचनाएँ
भूपति पण्डित	प्रेम पंचामृत
त्रिविक्रम भंज	कनकलता
लोकनाथा	चित्रकला
ब्रज बंधु	रामलीला
विश्वनाथ खुटिया	विचित्र रामायण
ब्रजनाथ	समर तरंग
दीनबंधु	राधाकृष्ण लीलामृत
भक्त चरणदास	मथुरा मंगल, मनःशिक्षा
सदानन्द कविसूर्य	युगल रसामृत लहरी, युगल रसामृत भंदरी, प्रेम तरंगिणी

बंगला साहित्य में रीतिकाल

बंगला में का कोई उललेख नहीं मिलता। रीति संबंधी या श्रृंगारिक कविताओं का वर्णन न होकर मध्यकाल से सीधे आधुनिक काल का प्रादुर्भाव हुआ।

हिन्दी साहित्य में रीति काल

अवधि है– 1643 ई0 से 1843 ई0 तक। इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं– सामन्ती अभिरूचि, आचार्यत्व प्रदर्शन की प्रवृत्ति, श्रृंगारिक प्रवृत्ति, नारी का सौन्दर्य चित्रण, नायिका भेद कथन, नखशिख वर्णन, भक्ति एवं वैराग्य का मिश्रण, प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण, आश्रयदाता की प्रशंसा, मुक्तक शैली का प्रयोग व ब्रजभाषा का प्रयोग। इसमें तीन प्रकार के कवि हुए। रीति बद्ध– चिन्तामणी, मतिराम, देव, जसवंत सिंह, मण्डन, भिखारीदास, दूलह, रघुनाथ, ग्वाल। रीति मुक्त– घनानंद, बोधा, आलम, ठाकुर, द्विजदेव। रीति सिद्ध– बिहारी। इस काल के कवियों ने काव्यांगो के लक्षण व उदाहरण लिखे, इसलिए इनके काव्य रीति ग्रंथ कहलाए। हिन्दी साहित्य के छात्र इस सर्ग में भी और वर्णन कर सकते हैं।

उड़िया साहित्य में आधुनिक युग

1803 में अंग्रेजों के उड़िसा पर अधिकार के बाद ही उड़िया साहित्य में इस युग का प्रदुर्भाव हुआ। उड़िया बाइबिल की छपाई सर्वप्रथम 1811 में तथा प्रथम उड़िया संवाद–पत्र ''उत्कल दीपिका'' का अभ्युदय 1866 में कटक से हुआ। आधुनिक उड़िया साहित्य के प्रधान स्रष्टा हैं– 1. राधानाथ राय, 2. फकीर मोहन सेनापति और 3. मधुसूदन राव। इस युग के प्रमुख रचनाकार हैं–

साहित्यकार	**रचनाएँ**
राधानाथ राय	महायात्रा, चिलिका, नन्दिकेश्वरी, केदारगौरी, ऊषा।
रामशंकर राय	कांचिकावेरी, वनमाला, कलिकाल। आप उड़िया नाटक के सच्चे प्रतिष्ठाता हैं।
खड्गप्रसाद	पद्मावती हरण (संस्कृत नाटक पद्धति से लिखित)।
रघुनाथ परिजा	गोपिनाथ वल्लभ (संस्कृत नाटक पद्धति से लिखित)।
गोपिनाथ महान्ति	अमृत संतान।
कान्हुचरण महान्ति	का।
गोदावरीश मिश्र	धर्मशताब्दिर ओडिशा ओ तहिरे मां स्थान।
गोदावरीश महापात्र	बंगा ओ सिधा।
नीलकंठ दास	आत्म जीवनी।
बैकुंठनाथ पट्टनायक	उत्तरायण।
सच्चिदानन्द राउतराय	कविता– 1962
सूर्यनारायण दास	ओड़िया साहित्य परिचय।
सीताकान्त महापात्र	वर्षा की सुबह।

अन्य साहित्यकार के रूप में राधामोहन राजेन्द्र, पण्डित गोदावरीश, अविश्वनी कुमार घोष, कालीचरण पट्टनायक, गोपाल छोटराय, मनोरंजन दास, रामचन्द्र मिश्र, भंजकिशोर पट्टनायक, कार्तिक घोष, व्योमकेश त्रिपाठी, कुन्तला कुमारी, माघाधर, मानसिंह, राधामोहन गड़नायक, कुंजबिहारी दास, महापात्र नीलमणी साहू, नित्यानन्द महापात्र, डॉ0 हरेकृष्ण महताब, सुरेन्द्र महान्ति, राजकिशोर राय आदि उल्लेखनीय हैं।

बंगला साहित्य में आधुनिक काल

इसका समय 1800 ई0 से अब तक है। माइकेल मधुसूदन ने मेघनाथ वध काव्य (1861 ई0) लिखा। यह पूर्वी विषय और पश्चिमी शैली का मिश्रण है। 1866 में इन्होंने चतुर्दश पदावली लिखी। बंगला नाटक में मधुसूदन ने आधुनिकता का प्रवेश कराया। महाभारत आधारित 'शर्मिष्ठा' (1859) और दुःखान्त नाटक 'कृष्णकुमारी' 1861 ई0 में लिखा। बिहारीलाल चक्रवर्ती (1835–1894) ने शरदमंगल (1879) लिखा। छोटी कहानी व उपन्यास के क्षेत्र में शरतचन्द्र चटोपाध्याय (1876–1938) ने अपने उपन्यासों में बंगाली लोगों के दैनिक जीवन पर लेखनी चलाई। राजाराम मोहन राय (1775–1833) ने सामाजिक–सांस्कृतिक–धार्मिक–बौद्धिक जागरूकता लाते हुए महिला सशक्तिकरण, विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में तथा बाल विवाह व जाति प्रथा के विरोध में लिखा। काशीप्रसाद घोष (1809–1837) ने अंग्रेजी साहित्य पर महत्त्वपूर्ण योगदान देते हुए बंगाली समुदाय के एक प्रतिष्ठित वर्ग 'भद्रलोक' पर अपने विचार व्यक्त किए। मनमोहन घोष (1869–1924) ने श्रृंगारपरक कविता लिखी। अरविन्द घोष (1872–1950) ने धर्म व दर्शन आधारित 'द लाइफ डिवाइन' लिखा। बंकिम चन्द्र चटोपाध्याय (1838–1894) ने 1876 में 'बंदे मातरम्' लिखा जो 1882 में प्रकाशित हुआ। इन्होंने ऐतिहासिक उपन्यास के साथ–साथ श्रृंगारपरक कविताएँ भी लिखी। कालिदास राय (1889–1975) ने वैष्णव मत पर लिखा। इनकी रचनाएँ– छत्रधारा, त्रिरत्न हैं। कुमुदरंजन मलिक (1883–1970) ने भी वैष्णव मत पर लिखते हुए शतदल, उजनी, वीथी, नूपुर, दरभा, कुहेली की रचना की। चन्द्रमोहन बागची (1878–1948) ने लेखा, रेखा, अपराजिता, निहारिका, महाभरा लिखा। अन्य रचनाकार हैं– सुरेन्द्रनाथ मजूमदार (1838–1878), अक्षयकुमार बरल (1860–1919), रजनीकांत सेन (1865–1910), गोविन्द दास (1854–1918), गिरिन्दा माहिनी दास (1857–1924), कामिनी राय (1864–1933), अतुलप्रसाद सेन (1871–1934), द्विजेन्द्रलाल राय, गिरीशचन्द्र घोष आदि।

हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल

इस काल की अवधि है– 1843 ई0 से अब तक। इस युग में उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, काव्य, निबंध आदि की रचना की गई। उपन्यास में पूर्व प्रेमचंद युग (1882–1916), प्रेमचंद युग (1916–1936), प्रेमचंदोत्तर युग (1936 से अब तक) चला। कहानी विधा में प्रारम्भिक युग, प्रेमचंद युग, प्रगतिवादी युग व स्वातन्त्र्योत्तर युग आया। नाटक में भारतेंदु युग,

प्रसाद युग व प्रसादोत्तर युग; एकांकी युग में भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, प्रसाद युग व स्वातंत्र्योत्तर युग; काव्य में भारतेंदु युग, द्विवेदी युग (1903– 1918), छायावाद युग (1918–1936), प्रगतिवादी युग (1936–1943), प्रयोगवाद (1943–1954), नयी कविता (1954–1964), अकविता (1964–अब तक); निबंध में भारतेंदु युग (1868–1903), द्विवेदी युग (1903–1920), शुक्ल युग (1920–1936), शुक्लोत्तर युग (1936–1950), स्वातन्त्र्योत्तर युग (1950 से अब तक) का प्रचलन हुआ। इसके अतिरिक्त नवगीत 1960 के बाद आया। नई कहानी 1950 के आसपास आई। सचेतन कहानी 1964 के लगभग आई। रेखाचित्र, संस्मरण, आलोचना, यात्रा साहित्य, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज आदि नई विधाओं ने जन्म लिया। हिन्दी के छात्र, इस युग के अन्तर्गत विभिन्न युग/वाद की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कवियों व उनकी कृतियों का वर्णन करें।

निष्कर्ष

उड़िया साहित्य के आदिकाल में इस युग में हास्य, श्रृंगार के साथ–साथ तत्त्व ज्ञान व दार्शनिक चिंतन का पता चलता है। जबकि बंगला साहित्य अपेक्षित विकास नहीं कर पाया। हिन्दी साहित्य में सामंतो एवं आश्रयदाताओं का गुणगान व युद्धों को सजीव चित्रण किया गया। बीर रस व श्रृंगार रस की प्रधानता रही। भाषा की दृष्टि से प्रायः डिंगल और अपभ्रंश का प्रयोग किया गया। इस युग की अधिकांश रचनाएँ अप्रमाणिक या अर्द्ध प्रमाणिक हैं।

उड़िया साहित्य में पंचसखा युग, उत्कल के धर्म तथा साहित्य–जगत में एक समृद्धितम युग है। इस युग में पाँच भक्त कवि सिद्ध पुरूषों ने वैष्णव संत साहित्य की रचना करते हुए ज्ञान मिश्रित भक्ति की धारा बहाई है। 1. महापुरूष बलरामदास, 2. भक्तकवि जगन्नाथदास, 3. महायोगी अच्युतानन्द, 4. सिद्ध पुरूष यशवन्त, 5. सिद्ध पुरूष अनन्तदास के नाम अग्र पंक्तियों में उल्लेखनीय है। जबकि बंगला में तीन प्रकार के साहित्यों की रचना हुई– वैष्णव साहित्य, मंगल साहित्य व अनुवाद साहित्य। हिन्दी साहित्य का यह युग स्वर्ण युग कहलाता है। 1318ई0 से 1643ई0 तक के समय को इसके अन्तर्गत रखा गया है। इस युग में सगुण भक्ति और निर्गुण भक्ति दोनों पर लेखनी चलाई गई। सगुण भक्ति में राम व कृष्ण की भक्ति की धारा बही। निर्गुण में अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना करते हुए कबीर बाणी के रूप में ज्ञान की चर्चा की गई।

उड़िया साहित्य में काव्य युग के कवि मुख्यतः श्रृंगारधर्मी हुए एवं उड़िया रीति–साहित्य मुख्यतः संस्कृत साहित्य के आदर्श में अनुप्राणित हुआ है। 15वीं सदी में उड़िया काव्य का जन्म हो गया था, परन्तु उसकी पुष्टि सत्रहवीं सदी में हुई। भंजयुग के आलंकारिक काव्यों का आरम्भ श्रीधर दास के ''कांचनलता'' काव्य से होता है। काव्य युग के कवि मुख्यतः श्रृंगारधर्मी हुए एवं उड़िया रीति–साहित्य मुख्यतः संस्कृत साहित्य के आदर्श में अनुप्राणित हुआ है। काव्य युग के

तीन प्रधान कवि– 1. भक्त कवि दीन कृष्ण दास, 2. उपेन्द्र भज एवं 3. भक्त कवि अभिमन्यु सामंत सिहार हुए। जबकि बंगला साहित्य में रीतिकाल का कोई उललेख नहीं मिलता। हिन्दी साहित्य में इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं– सामन्ती अभिरूचि, आचार्यत्व प्रदर्शन की प्रवृत्ति, श्रृंगारिक प्रवृत्ति, नारी का सौन्दर्य चित्रण, नायिका भेद कथन, नखशिख वर्णन, भक्ति एवं वैराग्य का मिश्रण, प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण, आश्रयदाता की प्रशंसा, मुक्तक शैली का प्रयोग व ब्रजभाषा का प्रयोग।

आधुनिक काल में उड़िया, बंगला व हिन्दी तीनों भाषा के साहित्य में विविध विषयों के प्रचुर साहित्य मिलते हैं।